।। श्रीहरिः ।।

हिन्दी बाल पोथी

भाग – 3

पाठ १

प्रार्थना

हम बालक हैं अति नादान।
तुम हो पिता! ज्ञानकी खान॥
वही वस्तु दो हमको आप।
जिससे मिटें सभी संताप॥
बुद्धि शुद्ध हो निर्मल ज्ञान।
होवे हम सबका कल्यान॥
तुमपर सदा रहे विश्वास।
कभी न करें पराई आस॥
सेवा करें, करें सम्मान।
सबमें सदा तुम्हें पहचान॥
भूलें नहीं तुम्हारी याद।
करें न एक पलक बरबाद॥
देखें तुम्हें सदा ही साथ।
सिरपर रहे तुम्हारा हाथ॥



पाठ २

[ङ, ञ, ण, न, म—जब ये अक्षर आधे होते हैं, तब पहलेवाले अक्षरके ऊपर बिन्दु (अनुस्वार) लगानेसे भी काम चल जाता है, जैसे—]

लङ्गूर—लंगूर	डङ्क—डंक
पञ्च—पंच	पञ्जाब—पंजाब
भिण्डी—भिंडी	कण्ठ—कंठ
सन्त—संत	अन्धा—अंधा
चम्पा—चंपा	शम्भु—शंभु

जंगल अंजन झंझट हंटर दंड
मंथरा चंदन महंत बंबई



बना सिंह जंगलका राजा। अहा बज रहा कैसा बाजा॥

सिंहासनकी शोभा न्यारी। छत्र लगा है कितना भारी॥
बंदर चंदन घिसकर लाया। तब सियारने उसे लगाया॥
सुंदर एक मुकुट पहनाया। हाथीने फिर फूल चढ़ाया॥
भालू बंसी लगा बजाने। और लगा घोड़ा तब गाने॥
ढोल मृदंग नगाड़ा खासा। डमरू शंख मँजीरा तासा॥
डफली औ सितार शहनाई। बजा-बजाकर खुशी मनाई॥
अब निकलेगी राजसवारी। संग रहेगी सेना भारी॥



क्षमा माँग लो

कभी भूलसे किसीको कोई कड़ी बात
कह दो तो तुरंत क्षमा माँग लो।
कभी भूलसे किसीको दुःख पहुँचानेवाला
काम हो जाय तो तुरंत क्षमा माँग लो।
कभी भूलसे रास्तेमें किसीसे टकरा जाओ
तो तुरंत क्षमा माँग लो।
कभी भूलसे किसीकी वस्तु उठा लो तो
तुरंत क्षमा माँग लो।

पाठ ३

[आधे 'र्' के आगे जो अक्षर होता है, उसीमें ' ' इस तरह लगानेसे 'र्' हो जाता है, जैसे—]

र्	+	ज	=	र्ज	अर्जी	तर्जनी
र्	+	द	=	र्द	दर्द	सर्दी
र्	+	म	=	र्म	धर्म	गर्मी
र्	+	श	=	र्श	दर्शन	फर्श
र्	+	प	=	र्प	सर्प	दर्पण

वर्षा अर्क अर्जुन वर्णमाला कर्म
कर्ण दर्जी खर्च थर्मामीटर

गर्मीके बाद वर्षा-ऋतु आती है। इस ऋतुमें पानी खूब बरसता है। चारों तरफ पानी और कीचड़ हो जाता है। पक्के



फर्शपर कीचड़ नहीं होता। गर्मीके कारण जो घास सूख जाती है, वह वर्षासे फिर हरी होने लगती है। सर्पोंके बिलोंमें पानी जाता है। इस कारण वे बाहर निकल आते हैं। वर्षाके दिनोंमें सर्पके दर्शन अधिक होते हैं।

वर्षाके दिनोंमें आम और जामुन खानेको खूब मिलते हैं। इस ऋतुमें पशु भी मोटे-ताजे हो जाते हैं। उनको भरपेट हरा चारा चरनेको मिलता है। पानी बरसनेसे खेतोंमें अन्न होता है। अन्न खाकर हम जीते हैं। वर्षा होते देखकर किसानको बड़ा हर्ष होता है।

वर्षाके दिनोंमें काले-काले बादल आकाशमें छाये रहते हैं, इससे कई बार दिनमें भी अँधेरा हो जाता है। कभी-कभी सूर्यभगवान्के भी दर्शन नहीं होते। बिजली क्यों चमकती है, बादलोंमें पानी कहाँसे आता है, यह तुम बड़े होकर पढ़ना।

हमारे देशमें मुख्य तीन ऋतुएँ होती हैं— सर्दी, गर्मी और वर्षा। वर्षाके बाद सर्दी और सर्दीके बाद गर्मी आती है।

अभ्यास—१-वर्षाके दिनोंमें सर्पके दर्शन अधिक क्यों होते हैं?
२-वर्षासे किसानको क्यों हर्ष होता है?
३-हमारे देशमें मुख्य कितनी ऋतुएँ हैं?



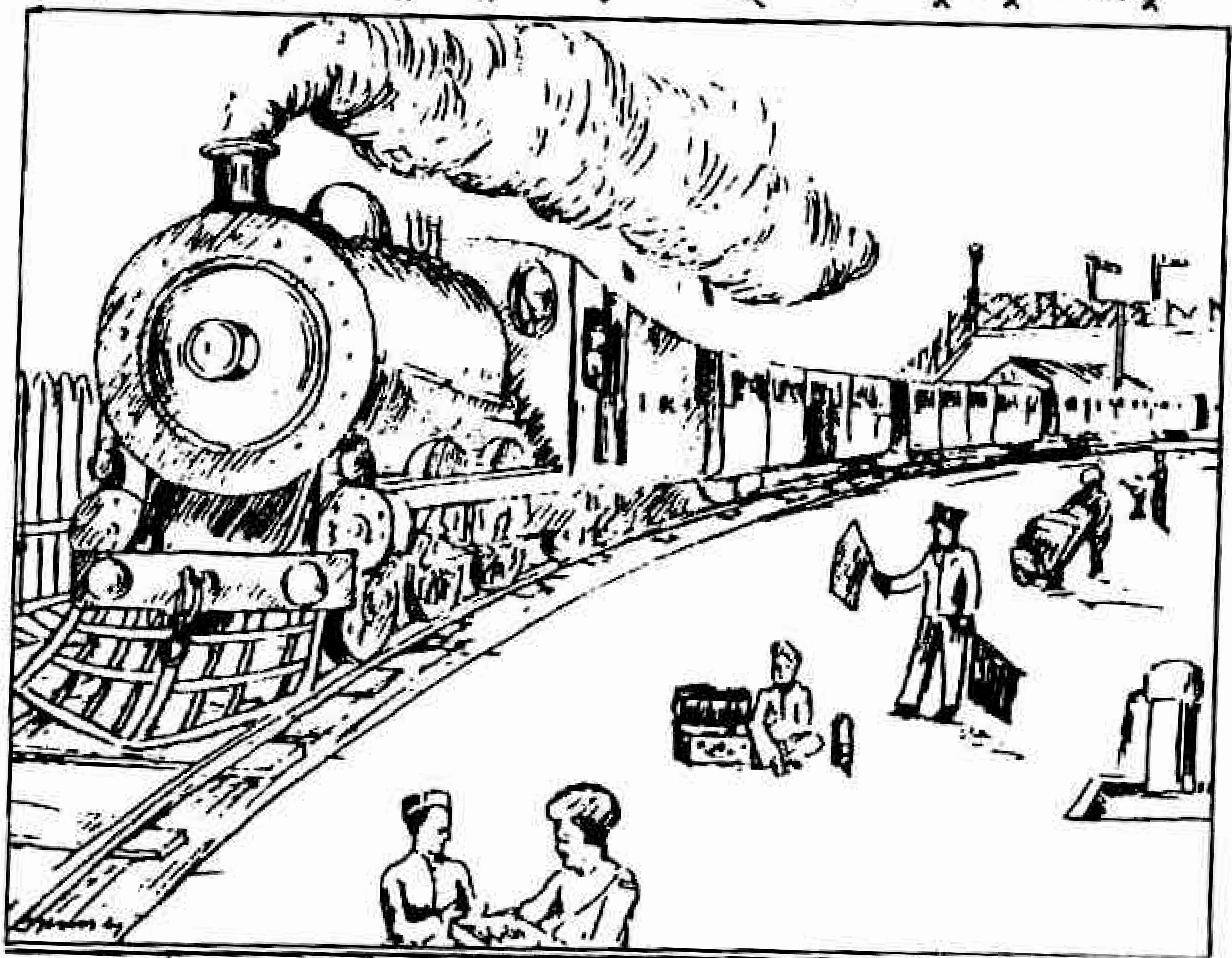
पाठ ४

[जब कोई आधा अक्षर 'र' में मिलता है तो वह आधा अक्षर तो पूरा ही लिखा जाता है, 'र' उस अक्षरके नीचे छोटी और तिरछी पाईके रूपमें लगाया जाता है, जैसे—]

क् + र = क्र	चक्र	परिक्रमा
ज् + र = ज्र	वज्र	
द् + र = द्र	चन्द्रमा	बद्रीनाथ
प् + र = प्र	प्रसाद	प्राण
म् + र = म्र	उम्र	नम्रता
श् + र = श्र (श्र)	श्रीराम	श्रवणकुमार

[ट् और ड् के नीचे 'र' इस तरह '्र' लगता है, जैसे—]

ट् + र = ट्र   ट्रेन ट्रामगाड़ी   ड् + र = ड्र ड्रिल पौंड्र*



* पौंड्र—अर्जुनके भाई भीमसेनके शङ्खका नाम है।

तुम सबने रेलगाड़ी देखी होगी। यह लोहेकी पटरियोंपर चलती है। इसके सबसे आगे इंजन रहता है। यही गाड़ीको खींचता है। इंजन भापसे चलता है। भाप क्या है, यह तुम अगली कक्षामें पढ़ना। इंजन चलनेसे पीछेके सब डिब्बे चलते हैं। हमलोग डिब्बोंमें बैठते हैं। इसलिये हम भी डिब्बोंके साथ चलते हैं और एक गाँवसे दूसरे गाँव चले जाते हैं।

इंजन चलानेवालेको ड्राइवर कहते हैं। गाड़ीके सबसे पीछेवाले डिब्बेमें एक अफसर रहता है। उसको गार्ड कहते हैं। गार्डकी आज्ञासे ड्राइवर गाड़ीको चलाता और रोकता है। गार्डके हाथमें दो झंडियाँ रहती हैं। एक झंडी लाल होती है और दूसरी हरी। लाल झंडी दिखानेसे ड्राइवर गाड़ीको रोक देता है। हरी झंडी दिखानेसे वह गाड़ीको चलाता है।

कभी भीड़ अधिक होती है और डिब्बेके भीतर बैठे हुए लोग दरवाजा नहीं खोलते, तब कोई-कोई यात्री पावदानपर खड़े होकर चला करते हैं। कुछ लड़के शौकसे पावदानपर खड़े हो जाया करते हैं। यह बहुत बुरा है। हाथ छूट जानेसे आदमी नीचे गिर पड़ते हैं। बहुत चोट लग जाती है। कोई-कोई मर भी जाता है। इसलिये शौकसे कभी पावदानपर खड़े मत होओ। कोई बाहर खड़ा हो तो दरवाजा खोलकर उसे भीतर ले लो।

अपने डिब्बेके सब आदमियोंसे प्रेमसे बोलो। डिब्बेमें कूड़ा मत फैलाओ; थूको मत। नाक न छिनको। फलोंके छिलके मत डालो। चीज खाकर कूड़ा खिड़कीसे बाहर फेंक दो। खिड़कीमेंसे अपना मुँह या हाथ कभी बाहर न निकालो।

सचमुच रेलगाड़ी हमारे बहुत कामकी है।

अभ्यास—

१-रेलगाड़ीमें सबसे आगे क्या रहता है?
२-इंजन चलानेवालेको क्या कहते हैं?
३-हम रेलगाड़ीके डिब्बेमें बैठे हुए एक स्थानसे दूसरे स्थानपर कैसे चले जाते हैं?
४-गार्ड कौन होता है? वह क्या करता है?
५-डिब्बेके लोगोंके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये?



प्रणाम करो

सबेरे जागते ही भगवान्‌को प्रणाम करो।
नित्य सोते समय भगवान्‌को प्रणाम करो।
देव-मन्दिरमें भगवान्‌को प्रणाम करो।
कथा-कीर्तनमें भगवान्‌को प्रणाम करो।
सबेरे उठते ही पृथ्वी-माताको प्रणाम करो।
सबेरे उठकर गो-माताको प्रणाम करो।
सबेरे उठकर तुलसीजीको प्रणाम करो।

पाठ ५

ह की मिलावट

[आधे 'ह्' के बाद पड़नेवाला अक्षर 'ह' के नीचे लिख दिया जाता है, जैसे—]

ह् + न = ह्न	मध्याह्न	जाह्नवी
ह् + म = ह्म	ब्राह्मण	ब्रह्मानन्द
ह् + य = ह्य	बाह्य	असह्य
ह् + र = ह्र	ह्रास	ह्रस्व
ह् + ल = ह्ल	प्रह्लाद	आह्लाद
ह् + व = ह्व	विह्वल	आह्वान

नीचेके चित्रको देखो। गङ्गाजी बह रही हैं। गङ्गाजी हमारे देशकी सबसे बड़ी और पवित्र नदी हैं। इनका एक नाम जाह्नवी भी है।

गङ्गाजीके किनारे सैकड़ों गाँव और शहर बसे हुए हैं।



गाँव और शहरके लोग प्रतिदिन गङ्गाजीमें स्नान करते हैं। गङ्गाजीमें स्नान करनेसे बड़ा पुण्य होता है। जो लोग गङ्गाजीसे दूर रहते हैं, वे कुएँ या तालाबपर नहाते हैं। कुछ लोग नहाते समय गङ्गाजीका नाम लेते हैं। क्या तुम जानते हो वे ऐसा क्यों करते हैं? वे गङ्गाजीका नाम लेकर उनका आह्वान करते हैं। गङ्गाजीका आह्वान करनेसे कुएँ और तालाबका पानी पवित्र हो जाता है।

प्रात:काल गङ्गाजीके किनारे भीड़ लग जाती है। सैकड़ों स्त्री-पुरुष और बालक स्नान करने आते हैं। मध्याह्नके समय भीड़ कम होती है। उस समय धूप हो जाती है। धूपके समय नहानेसे रोग पैदा होता है।

स्नान करके लोग किनारेपर बैठकर या खड़े होकर भगवान्‌की पूजा करते हैं। चित्रमें ब्रह्मानन्दजीको देखो। वे शिवजीपर जल चढ़ा रहे हैं। ब्रह्मानन्दजी बड़े तड़के आकर गङ्गाजीमें स्नान करते हैं। सर्दीके दिनोंमें जब असह्य ठंड पड़ती है, तब भी वे सूर्य उगनेसे पहले ही गङ्गाजीपर आकर नहाते हैं। वे सच्चे ब्राह्मण हैं।

गङ्गाजीके जलमें रोग नाश करनेकी ताकत है। बरसों रखे रहनेपर भी गङ्गाजीके जलमें कीड़े नहीं पड़ते। गङ्गाजीके जलमें डाले हुए रोगके कीटाणु तुरंत नष्ट हो जाते हैं। गङ्गाजीकी मिट्टी मलनेसे दाद-खाज आदि रोग दूर होते हैं। हिन्दू मानते हैं कि गङ्गाजीका जल मरते समय पिलानेसे मरनेवालेकी अच्छी गति होती है, यहाँतक कि मरे हुएकी हड्डी भी गङ्गाजीमें डाल देनेसे उसकी मुक्ति हो जाती है; इसलिये हिन्दू गङ्गाजीमें हड्डी डालते हैं। गाँधीजीकी हड्डी भी गङ्गाजीमें डाली गयी थी।

बालको! दशहरेकी छुट्टियोंमें तुम भी गङ्गाजीमें स्नान करने जाना। गङ्गाजीको देखकर तुम्हें बड़ा आह्लाद होगा।

अभ्यास—

१-लोग गङ्गाजीमें स्नान क्यों करते हैं?

२-कुएँ और तालाबपर स्नान करनेवाले गङ्गाजीका नाम क्यों लेते हैं?

३-मध्याह्नके समय क्यों नहीं नहाना चाहिये?

४-ब्रह्मानन्दजी नित्य क्या करते थे?

५-गङ्गाजीमें मरे हुएकी हड्डी डालनेसे क्या होता है?



प्रणाम करो—

रोज सबेरे माताजीको प्रणाम करो।

रोज सबेरे पिताजीको प्रणाम करो।

रोज सबेरे बड़े भाईको प्रणाम करो।

रोज सबेरे सब बड़े लोगोंको प्रणाम करो।

पाठशालामें शिक्षकोंको प्रणाम करो।

घर आये अभ्यागतको प्रणाम करो।

कहीं तुमसे कोई बड़े मिलें तो प्रणाम करो।

हाथ जोड़कर प्रणाम करो।

सिर झुकाकर प्रणाम करो।

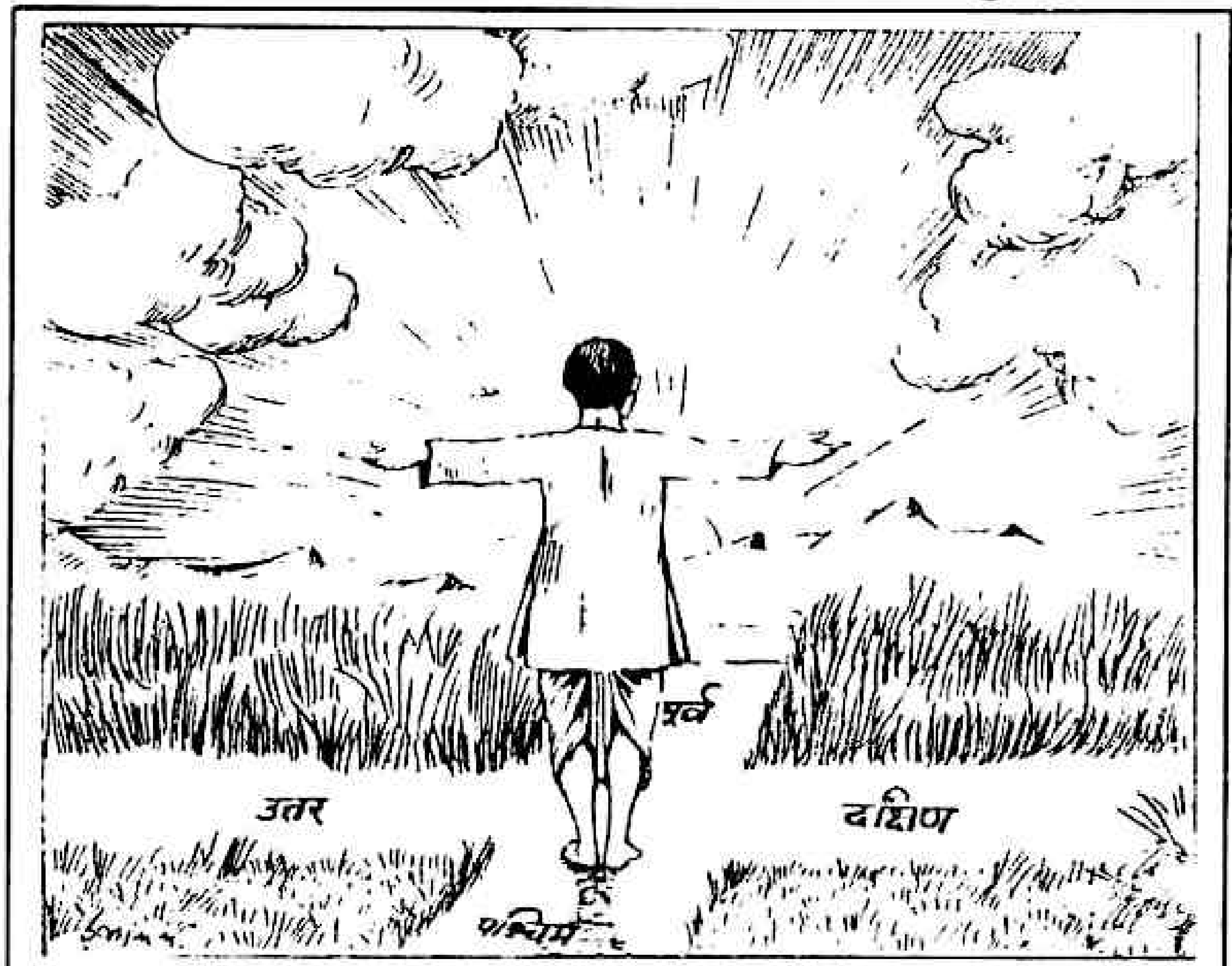
नम्रतासे प्रणाम करो।

पाठ ६

[पाईवाले आधे अक्षरके बाद यदि ह्रस्व 'इ' की मात्राके सहित कोई अक्षर आता है तो 'इ' की मात्रा आधे अक्षरके पहले लगती है, जैसे—]

क् + खि = क्खि	दक्खिन	च् + छि = च्छि	पच्छिम
न् + दि = न्दि	मन्दिर	म् + बि = म्बि	अम्बिका
ण् + डि = ण्डि	पण्डित	श् + चि = श्चि (श्चि)	पश्चिम
ग् + घि = ग्घि	बग्घियाँ	स् + ति = स्ति	हस्तिनापुर

मक्खियाँ नन्दिनी चण्डिका पुस्तिका



सबेरा हुआ। सूर्यदेव निकल रहे हैं। सूर्यदेव पूर्व दिशामें निकलते हैं। वे पश्चिमकी ओर छिपते हैं। पूर्वकी ओर मुँह

करनेसे पीठकी तरफ पश्चिम होता है। बायें हाथकी ओर उत्तर होता है। दाहिने हाथकी ओर दक्षिण होता है। गाँवके लोग पूर्वको पूरब कहते हैं, वे पश्चिमको पच्छिम और दक्षिणको दक्खिन कहते हैं।

सूर्यदेव संसारका बड़ा उपकार करते हैं। इसलिये लोग उनकी पूजा करते हैं। रोज उनको जल और फूलसे अर्घ्य देते हैं। उनको प्रणाम करते हैं। सूर्यदेवकी एक पूजाको संध्या करना कहते हैं। हमारे पड़ोसमें एक पण्डितजी रहते हैं, उनका नाम अम्बिकादत्तजी है। वे सूर्यदेवके बड़े भक्त हैं। वे तीन समय संध्या करते हैं—सबेरे, दोपहर और शाम। संध्या करके पण्डितजी मन्दिर जाते हैं। वहाँ वे भगवान् श्रीकृष्णके दर्शन करते हैं।

सूर्यदेवके निकलते ही अँधेरा दूर हो जाता है। संसारकी सारी चीजें दिखायी पड़ने लगती हैं। सब लोग अपने-अपने काममें लग जाते हैं। सूर्यदेव न निकलें तो सदा अँधेरा बना रहे। इन्हींसे हमें गरमी भी मिलती है। धूपकी गर्मीसे सब पेड़-पौधे बढ़ते हैं। धूपसे अन्नकी बालियाँ बढ़ती हैं और पकती हैं। सूर्यदेव न हों तो धरतीपर एक भी पेड़ दिखायी न दे। अन्नका एक भी दाना न हो। अन्न न हो तो सब आदमी भूखों मर जायँ। घास, पत्ते, फल और फूल न हों तो सब जानवर और चिड़ियाँ मर जायँ। इस प्रकार संसारके सब जीव सूर्यदेवके सहारे जीते हैं।

हमें रोज सबेरे-शाम हाथ जोड़कर सूर्यदेवको प्रणाम करना चाहिये।

अभ्यास—१-सूर्यदेव किधर निकलते हैं और किधर छिपते हैं?
२-सूर्यदेवके हमपर क्या-क्या उपकार हैं?
३-सूर्यदेव न निकलें तो क्या हो?
४-सूर्यदेवका बदला हमें कैसे चुकाना चाहिये?



पाठ ७

'ॉ' की मात्रा

[यह मात्रा प्राय: अंग्रेजी शब्दोंमें आती है। इसका उच्चारण 'आ' और 'ओ' के बीचका होता है, जैसे—]

फुटबॉल हॉल कॉलेज कॉङ्ग्रेस

कॉङ्ग्रेस हमारे देशकी पुरानी राष्ट्रिय महासभा है। इसने देशकी बड़ी सेवा की है। हमारे देशको स्वतन्त्रता प्राप्त करानेमें सबसे अधिक हाथ कॉङ्ग्रेसका ही रहा है।

देशके बड़े-बड़े योग्य और विद्वान् व्यक्ति इसके सभापति हो चुके हैं। श्रीदादाभाई नौरोजी, मौलाना मुहम्मद अली, श्रीगोपालकृष्ण गोखले, देशबन्धु श्रीचित्तरंजनदास, पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय, महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, देशरत्न श्रीराजेन्द्रप्रसाद, पण्डित मोतीलालजी नेहरू, पण्डित जवाहरलालजी नेहरू और नेताजी सुबासचन्द्र बोस कॉङ्ग्रेसके सभापतियोंमें प्रसिद्ध हैं।

वर्षमें एक बार कॉङ्ग्रेसकी बड़ी सभा होती है। इस सभामें देशके कोने-कोनेसे हजारों आदमी इकट्ठे होते हैं। यह सभा किसी गाँवमें होती है। सभा होनेसे वह गाँव बड़ा मशहूर हो जाता है। फैजपुर, त्रिपुरी, हरिपुर और रामगढ़—ये छोटे गाँव भी कॉङ्ग्रेसकी सभाके कारण

बड़े मशहूर हो गये हैं।

कॉङ्ग्रेसका सबसे अधिक नाम महात्मा गाँधीके कारण हुआ। देशके लोगोंको महात्माजी पिताके समान प्यारे थे। इसलिये सब उनको 'राष्ट्रपिता' कहते हैं। बालको! बड़े होकर तुम कॉङ्ग्रेस और 'राष्ट्रपिता' के बारेमें सब बातें पढ़ना।

अभ्यास—१- कॉङ्ग्रेस क्या है?

२- कॉङ्ग्रेसके सभापतियोंमें कौन-कौन प्रसिद्ध हैं?

३- 'राष्ट्रपिता' किनका नाम है?

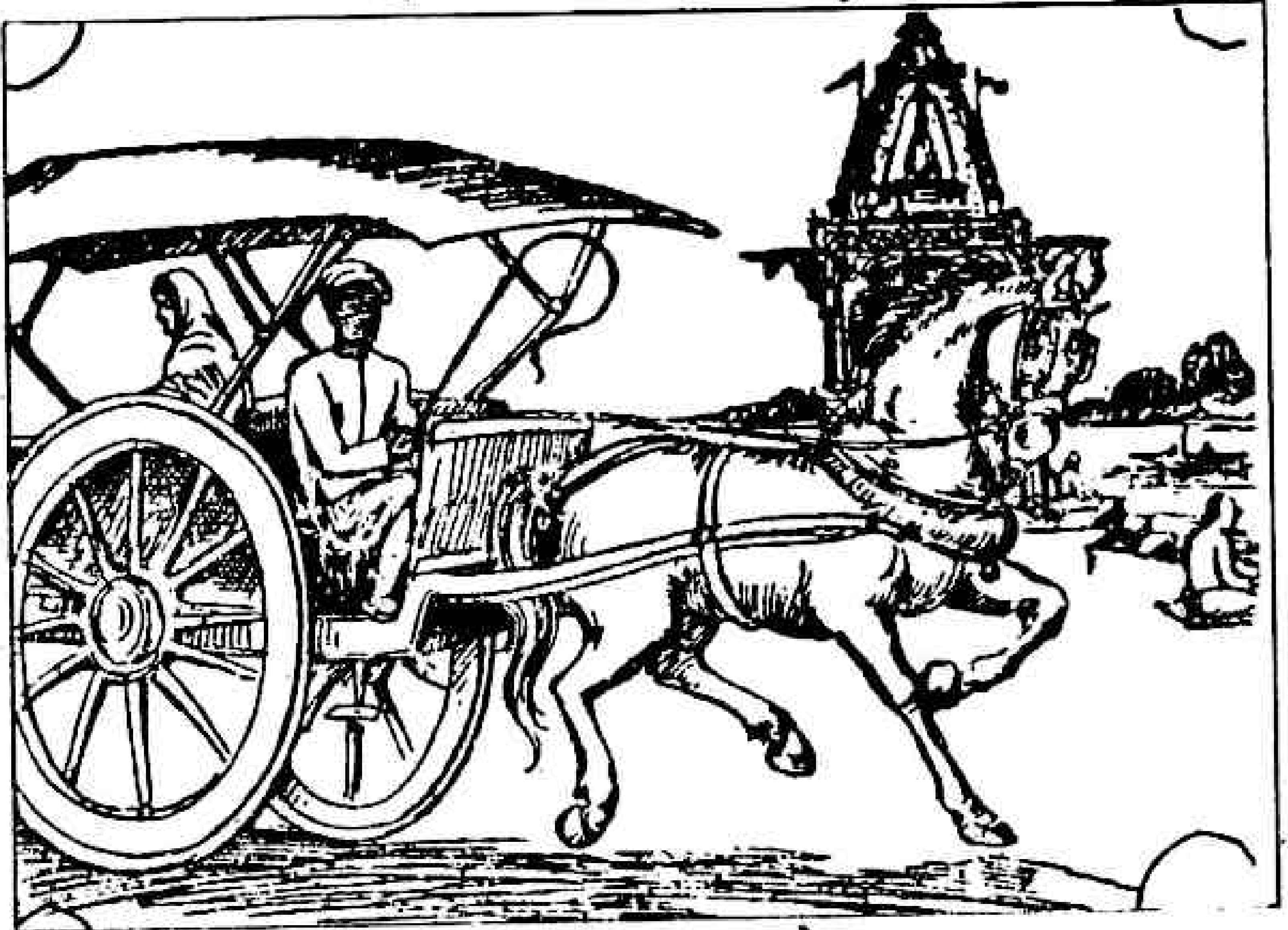


स्मरण रखो

जो सफाई नहीं रखेगा, वह बीमार पड़ेगा।
जो सफाई नहीं रखेगा, वह अशान्त रहेगा।
जो सफाई नहीं रखेगा, उससे लोग घृणा करेंगे।
जो सदाचारी नहीं है, वह बीमार होगा।
जो सदाचारी नहीं है, वह अशान्त रहेगा।
जो सदाचारी नहीं है, उससे लोग घृणा करेंगे।
जो परिश्रमी नहीं बनेगा, वह बीमार पड़ेगा।
जो परिश्रमी नहीं बनेगा, वह अशान्त रहेगा।
जो परिश्रमी नहीं बनेगा, वह कहीं सफल नहीं होगा।

पाठ ८

हमारा घोड़ा



देखो खड़ा हमारा घोड़ा।
कभी नहीं खाता यह कोड़ा॥
ज्यों ही पाता तनिक इशारा।
त्यों ही चल पड़ता बेचारा॥
हमें पाठशाला ले जाता।
शहर पिताजीको पहुँचाता॥
ताँगेमें झट जुत जाता है।
माँको गंगा ले जाता है॥
रोज भिगोये चने चबाता।
इसीलिये मेहनत कर पाता॥
हम भी कच्चे चने चबायें।
तो हट्टे कट्टे हो जायें॥

पाठ ९

अखाड़ा

तुम कभी अखाड़ा देखोगे तो तुम्हें दो आदमी एक-दूसरेको पकड़े हुए जोर लगाते दिखायी देंगे। उनको देखकर यह मत समझना कि वे लड़ाई-झगड़ा या मार-पीट कर रहे हैं। वे दोनों मित्र हैं। वे आपसमें कुश्ती लड़ रहे हैं। उस अखाड़ेको कुछ लोग व्यायामशाला भी कहते हैं। वहाँ बहुत-से लोग नित्य कसरत करने और कुश्ती लड़ने जाते हैं। ऐसा करनेसे उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है। वे जल्दी बीमार नहीं पड़ते। मेहनतका काम वे खूब कर सकते हैं। अपने घरका और खेतका सब काम वे अपने-आप कर लेते हैं। उनका शरीर भी देखनेमें बहुत अच्छा लगता है।

हमारे देशमें गामा और राममूर्ति प्रसिद्ध पहलवान और बलवान् हुए हैं। इनका नाम संसारभरमें फैला हुआ है। संसारभरके नामी पहलवान गामासे कुश्ती लड़े। गामाने सबको पछाड़ दिया। सबको हराकर उन्होंने अपने देशका नाम ऊँचा किया।

राममूर्ति बड़े पहलवान थे। वे इस युगके भीम कहलाते थे। भीम पाँचों पाण्डवोंमें युधिष्ठिरके छोटे भाई थे और अर्जुनके बड़े भाई। वे बहुत बलवान् थे। राममूर्तिकी दूसरे

देशवाले भी बड़ाई करते थे। वे अपनी छातीपर हाथीको चढ़ा लेते थे। ऐसे कई और भी बहुत बलवाले काम वे दिखाते थे।

हम सबको नित्य व्यायाम करना चाहिये। नियमसे अपने यहाँके अखाड़ेमें जाना चाहिये।

अभ्यास—१-अखाड़ा किसे कहते हैं?

२-व्यायाम करनेसे क्या लाभ है?

३-गामा और राममूर्ति क्यों प्रसिद्ध हैं?



स्मरण रखो—

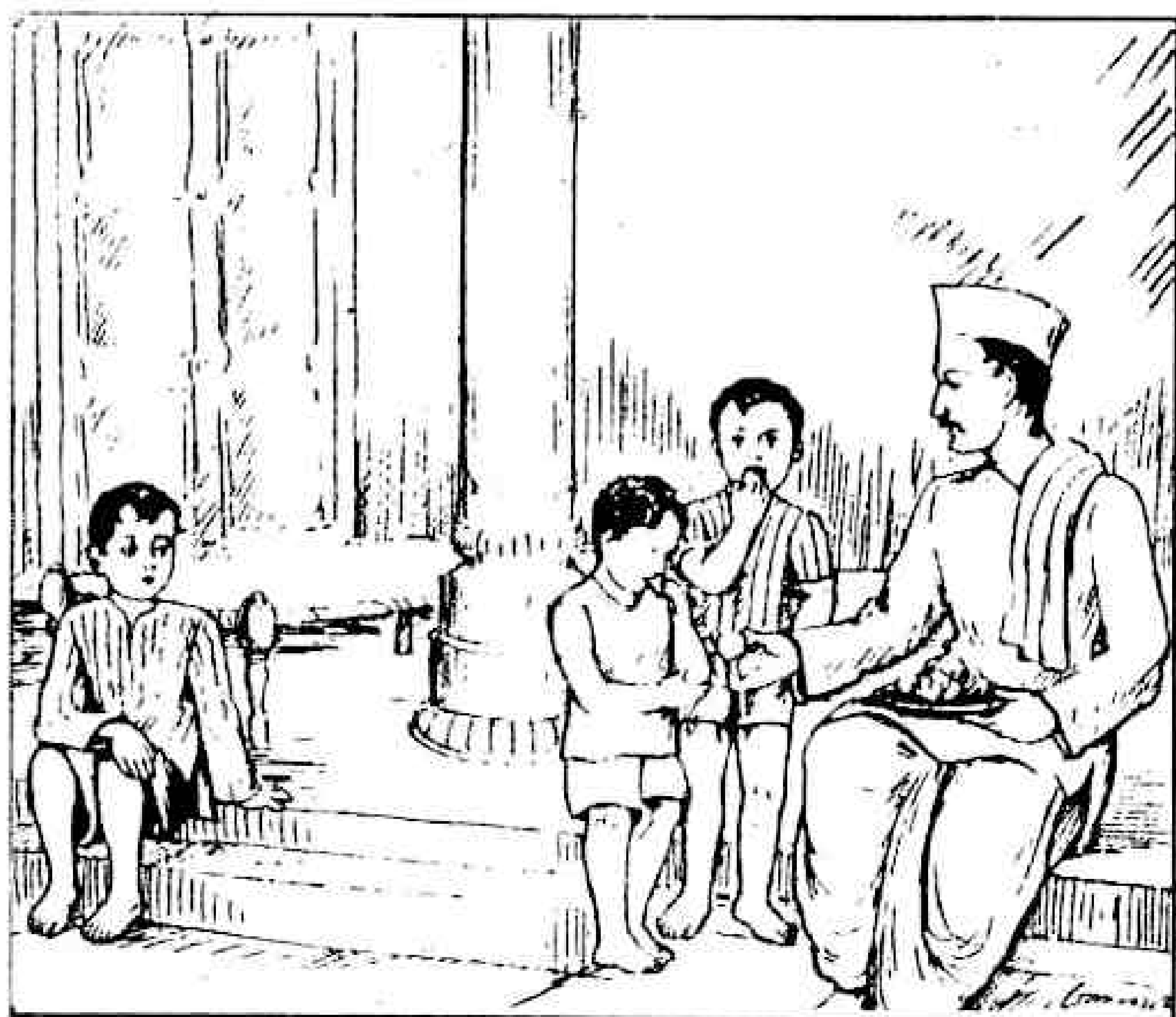
सत्यवादीका आदर होता है।
सदाचारीका आदर होता है।
स्वच्छ और पवित्र रहनेवालेका आदर होता है।
सफल वह होता है, जो नियमसे चलता है।
सफल वह होता है, जो सावधान रहता है।
सफल वह होता है, जो आलस्य नहीं करता।
सफल वह होता है, जो घमंड नहीं करता।
सफल वह होता है, जो हठ नहीं करता।
सफल वह होता है, जो क्रोध नहीं करता।

पाठ १०

बहानेबाजीका फल

मोती पाठशाला जानेसे बहुत जी चुराता था। वह बहुत बार एक-न-एक बहाना बनाकर घर रह जाता था। उस दिन उसके पिताजीको उसे लेकर पाठशाला जाना पड़ता था।

एक दिन उसके पिताजी शहर चले गये। मोतीने सोचा कि आज पढ़ने नहीं जाऊँगा। पाठशालाका समय हो गया। मोती चुपचाप बैठा था। माँने पूछा—पाठशाला जानेकी तैयारी क्यों नहीं करता? मोतीने कहा—माँ! आज मैं पढ़ने



नहीं जाऊँगा। माँने पूछा—क्यों नहीं जाओगे? मोतीने बताया कि पेटमें दर्द हो रहा है। माँ समझ गयी कि वह बहाना कर

रहा है। वह बोली— देखो, बहाना मत करो। सीधी तरहसे पढ़ने चले जाओ। पढ़ने न जाना बहुत बुरी आदत है। किंतु मोती बोला— माँ! मैं बहाना नहीं करता। सचमुच मेरे पेटमें दर्द है। माँ चुप हो गयी। मोती घरपर रह गया।

शामको मोतीके पिताजी घर आये। वे मिठाई और बहुत-सी अच्छी-अच्छी चीजें लाये। पिताजीने आते ही पूछा—क्यों मोती! पढ़ने गये थे? मोतीने धीरेसे कहा—पिताजी! पेटमें दर्द था। पिताजी बोले—तब तुम चारपाईपर लेट जाओ। मिठाई तुमको हानि करेगी, आज रातमें तुम भोजन भी नहीं करना।

मोतीके सामने पिताजीने सबको मिठाई बाँट दी। सब मिठाई खाने लगे। मोती देख-देखकर ललचा रहा था। अन्तमें उसने सोचा कि यदि मैं बहाना बनाकर आज घर नहीं रहता तो मुझे भी मिठाई मिलती। उस दिनसे उसने बहाना करना छोड़ दिया। अब वह रोज पाठशाला जाने लगा।

अभ्यास—१-मोती कैसा लड़का था?

२-पिताजीने उसे मिठाई क्यों नहीं दी?

३-इस कहानीसे क्या शिक्षा मिलती है?



पाठ ११

सब भाई

श्याम और मदन दोनों एक पाठशालामें पढ़ते थे। एक दिन दोनोंने आपसमें झगड़ा कर लिया। गुरुजीको यह बात मालूम हो गयी। उन्होंने दोनोंको अपने पास बुलाया।

गुरुजीने श्यामसे पूछा—श्याम! तुमने मदनसे झगड़ा क्यों किया?

श्याम—गुरुजी! उसने मेरी पुस्तक उठा ली और पढ़ने लगा।

गुरुजी— इसमें झगड़ा करनेकी क्या बात थी? तुम्हारी पुस्तकको उसने पढ़नेके लिये उठा लिया तो तुम्हें खुशी होनी चाहिये। मदन तुम्हारा भाई है। भाईको चीज देकर खुशी होती है या उससे झगड़ा किया जाता है?

श्याम— गुरुजी! भाईको चीज देकर तो खुशी होती है, परंतु मदन मेरा भाई थोड़े ही है।

गुरुजी—श्याम! यही तुम्हारी गलती है। देखो, जैसे नटवर तुम्हारा भाई है, वैसे ही मदन तुम्हारा भाई है। तुम भगवान्‌की संतान हो, मदन भी भगवान्‌की संतान है। भगवान् तुम दोनोंके पिता हैं। इसलिये तुम दोनों भाई-भाई हो।

श्याम— अच्छा गुरुजी! मैं आजसे मदनको अपना भाई मानूँगा। पर क्या गुरुजी! करीम भी मेरा भाई है?

गुरुजी— हाँ, करीम भी तुम्हारा भाई है। वह भी भगवान्‌की संतान है।

श्याम— गुरुजी! क्या विलियम भी मेरा भाई है?

गुरुजी— हाँ, विलियम भी तुम्हारा भाई है। वह भी भगवान्‌की संतान है।

श्याम— गुरुजी! क्या जमशेद भी मेरा भाई है?

गुरुजी— हाँ, जमशेद भी तुम्हारा भाई है। वह भी भगवान्‌की संतान है।

श्याम— गुरुजी! यह तो आज आपने बड़ी अच्छी बात बतायी। अबतक मेरे एक ही भाई था, अब मेरे कई भाई हो गये। मदन मेरा भाई हो गया। करीम मेरा भाई हो गया। विलियम मेरा भाई हो गया। जमशेद भी मेरा भाई हो गया।

गुरुजी— श्याम! देखो, एक पाठशालामें पढ़नेवाले, एक पड़ोसमें रहनेवाले, एक गाँवमें रहनेवाले, एक शहरमें रहनेवाले, एक देशमें रहनेवाले सभी भाई हैं। इतना ही नहीं, इस संसारके सभी जीव भाई-भाई हैं। सब भगवान्‌की संतान हैं। भगवान् सबके पिता हैं। अतएव किसीसे भी झगड़ा नहीं करना चाहिये।

श्याम— गुरुजी! कल मैंने नटवर भैयासे झगड़ा किया था तो माताजीने मुझे फल नहीं दिये! मैं करीमसे झगड़ा करूँगा तो क्या भगवान् मुझपर नाराज होंगे?

गुरुजी— हाँ, करीमसे झगड़ा करनेपर भगवान् तुमपर अवश्य नाराज होंगे। जो आपसमें हिल-मिलकर रहते हैं, एक-दूसरेकी सहायता करते हैं, उनपर भगवान् सदा प्रसन्न रहते हैं, भगवान्‌के प्रसन्न होनेपर फिर हमें कोई कष्ट नहीं होता। अतएव अपने पिता भगवान्‌को प्रसन्न रखनेके लिये कभी किसीसे झगड़ा मत करो। सबसे प्रेमसे बोलो।

किसीका कोई काम हो तो प्रेमके साथ कर दो। किसीको कोई चीज चाहिये और तुम्हारे पास वह हो तो उसे दे दो।

अभ्यास—

१-श्यामने मदनसे झगड़ा क्यों किया?

२-गुरुजीने श्यामको क्या समझाया?

३-करीम, विलियम, जमशेदको श्याम भाई क्यों मानने लगा?

४-जो आपसमें झगड़ा करता है, भगवान् उसपर नाराज होते हैं या प्रसन्न?

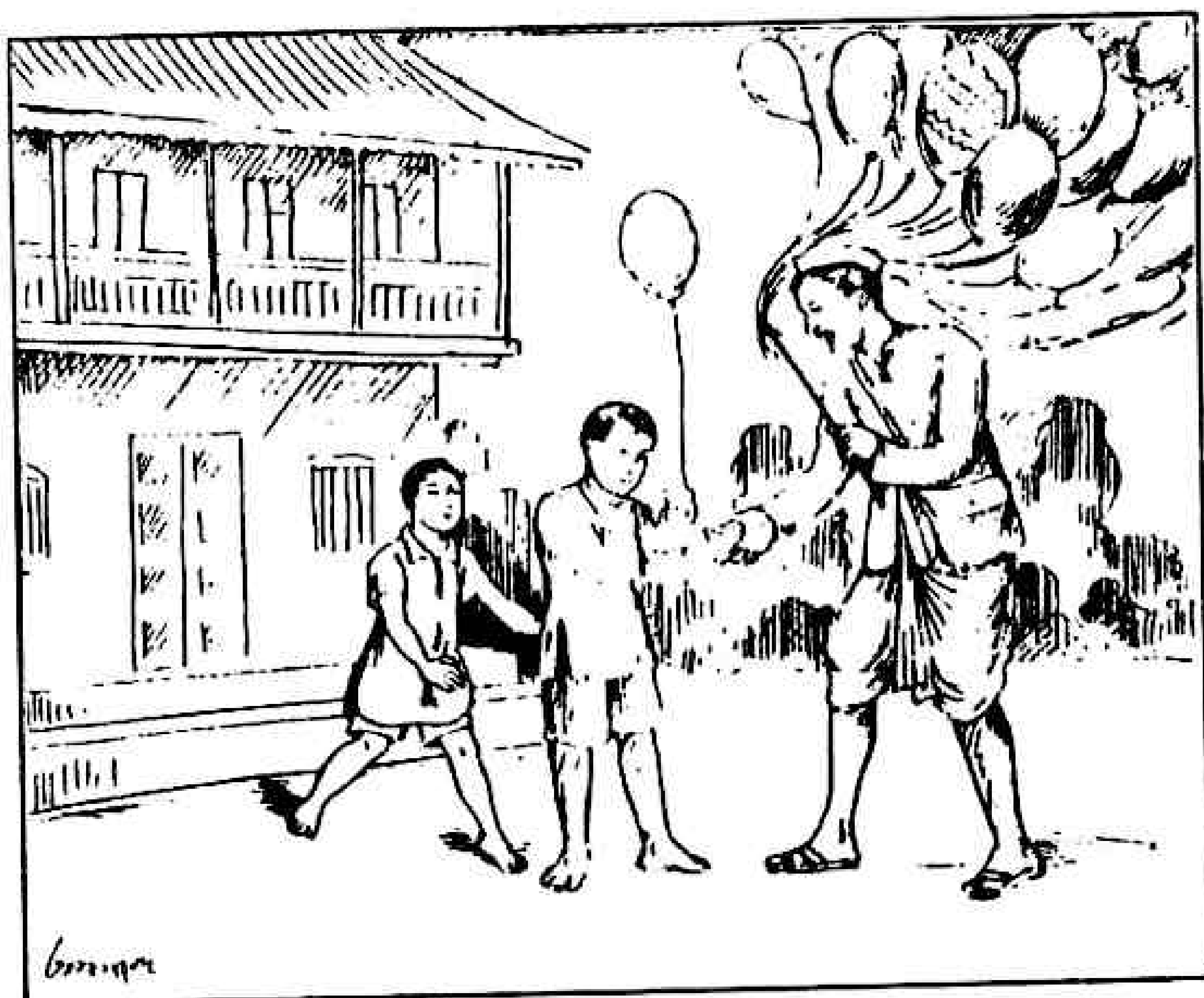


आदर

तुम अपने देशका आदर करते हो—
तुम देशके सुपुत्र हो।
तुम अपनी जातिका आदर करते हो—
तुम जातिके सुपुत्र हो।
तुम अपने धर्मका आदर करते हो—
तुम धर्मके सुपुत्र हो।
तुम माता-पिताका आदर करते हो—
तुम माता-पिताके सुपुत्र हो।

पाठ १२

गुब्बारेवाला



देखो, देखो, गोकुल आया। रँग रँगके गुब्बारे लाया॥
लाल गुलाबी नीले पीले। हरे बैगनी सब चमकीले॥
लाया छोटे बड़े मँझोले। ऊपर फूले भीतर पोले॥
इनके मुँहपर बाँधा डोरा। बाँध छड़ीमें फिर झकझोरा॥
उड़ने लगे अहा गुब्बारे। आपसमें टकराकर सारे॥
दाम मँझोलेका दो पैसा। रँग ले लो तुम चाहो जैसा॥
बने रबरके हैं गुब्बारे। कैसे लगते सबको प्यारे॥
जो है ज्यादा फूक लगाता। उसका फटसे है फट जाता॥



पाठ १३

सिद्धार्थकी दयालुता

ढाई हजार वर्षसे भी पहलेकी बात है। कपिलवस्तुके राजा शुद्धोदनके सिद्धार्थ नामका एक राजकुमार था। वह राजाका लड़का था, इससे उसको किसी दुःखका कोई पता नहीं था। जो खुद दुःख नहीं पाता वह दूसरेके कष्टको नहीं समझ सकता। लेकिन वह ऐसा नहीं था। उसके हृदयमें बड़ी दया थी। उसका बड़ा ही कोमल हृदय था। वह किसीको भी दुःखी देखता तो उसकी आँखोंसे आँसू झरने लगते।



एक दिन सिद्धार्थ बगीचेमें गया था। शाम हो आयी थी। सूरज छिप रहे थे। पक्षी उड़-उड़कर अपने घोंसलोंमें जा रहे थे। अचानक एक हंसकी करुण बोली सुनायी दी।

सिद्धार्थने देखा—एक हंस चक्कर खाकर धरतीपर गिर पड़ा। सिद्धार्थ दौड़कर हंसके पास गया। उसने देखा, हंसकी छातीमें एक तीर बिंध रहा है। खून बह रहा है और वह पीड़ासे बुरी तरह छटपटा रहा है। हंसकी पीड़ा सिद्धार्थसे देखी नहीं गयी। उसका हृदय उमड़ आया। उसने हंसको तुरंत उठाकर अपनी गोदमें ले लिया, उसके शरीरपर प्रेमसे हाथ फेरा और बड़ी सावधानीके साथ तीर खींचकर निकाल दिया। फिर उसके घावपर ताजे पत्तोंका रस निचोड़ा। हंसका दर्द कम हो गया और सिद्धार्थकी सेवासे वह बहुत कुछ चंगा हो गया।

इस समय सिद्धार्थके चचेरे भाई देवदत्तने वहाँ आकर कहा— 'सिद्धार्थ! यह मेरा शिकार है, मुझे दे दो।' सिद्धार्थने कहा— 'भाई! मैं इसको तुम्हें नहीं दूँगा।' देवदत्त बोला—'मैंने इसका शिकार किया है, यह मेरी चीज है, तुम मुझे क्यों नहीं दोगे?' सिद्धार्थने कहा— 'भाई! तुम उसे मार रहे थे, मैंने उसको बचाया है। तुम्हीं बताओ, मारनेवालेका हक होता है या बचानेवालेका?'

यह सुनकर देवदत्तने राजा शुद्धोदनसे जाकर कहा। सिद्धार्थ भी वहाँ जा पहुँचा। शुद्धोदनने सारा हाल सुनकर कहा— 'बेटा सिद्धार्थ! हंस देवदत्तको क्यों नहीं दे देते? तीर उसने चलाया था या तुमने?'

सिद्धार्थने जवाब दिया— 'पिताजी! यह सच है कि देवदत्तने तीर मारकर हंसको नीचे गिराया था, पर देवदत्तको हंसपर तीर चलानेका अधिकार ही क्या था? वह बेचारा आकाशमें उड़ा जा रहा था। उसने देवदत्तकी कोई हानि नहीं

की। देवदत्तने अकारण ही उसको कष्ट पहुँचाया। मुझसे उसका दुःख देखा नहीं गया और मैंने तीर निकालकर दवा लगाकर उसके प्राण बचाये। अब तो उसपर मेरा ही अधिकार है।'

महाराजको यह बात अच्छी लगी। उन्होंने कहा— 'मारनेवालेसे बचानेवाला बड़ा होता है और मारनेवालेसे बचानेवालेका अधिकार अधिक होता है, इसलिये यह हंस सिद्धार्थका है।' इन सब बातोंको सुनकर देवदत्तका हृदय भी पिघल गया। उसको अपनी भूल दिखायी दी।

सिद्धार्थने हंसको छोड़ दिया। हंस सुखी मनसे आकाशमें उड़ गया। यही सिद्धार्थ आगे चलकर बुद्धभगवान् हुए।

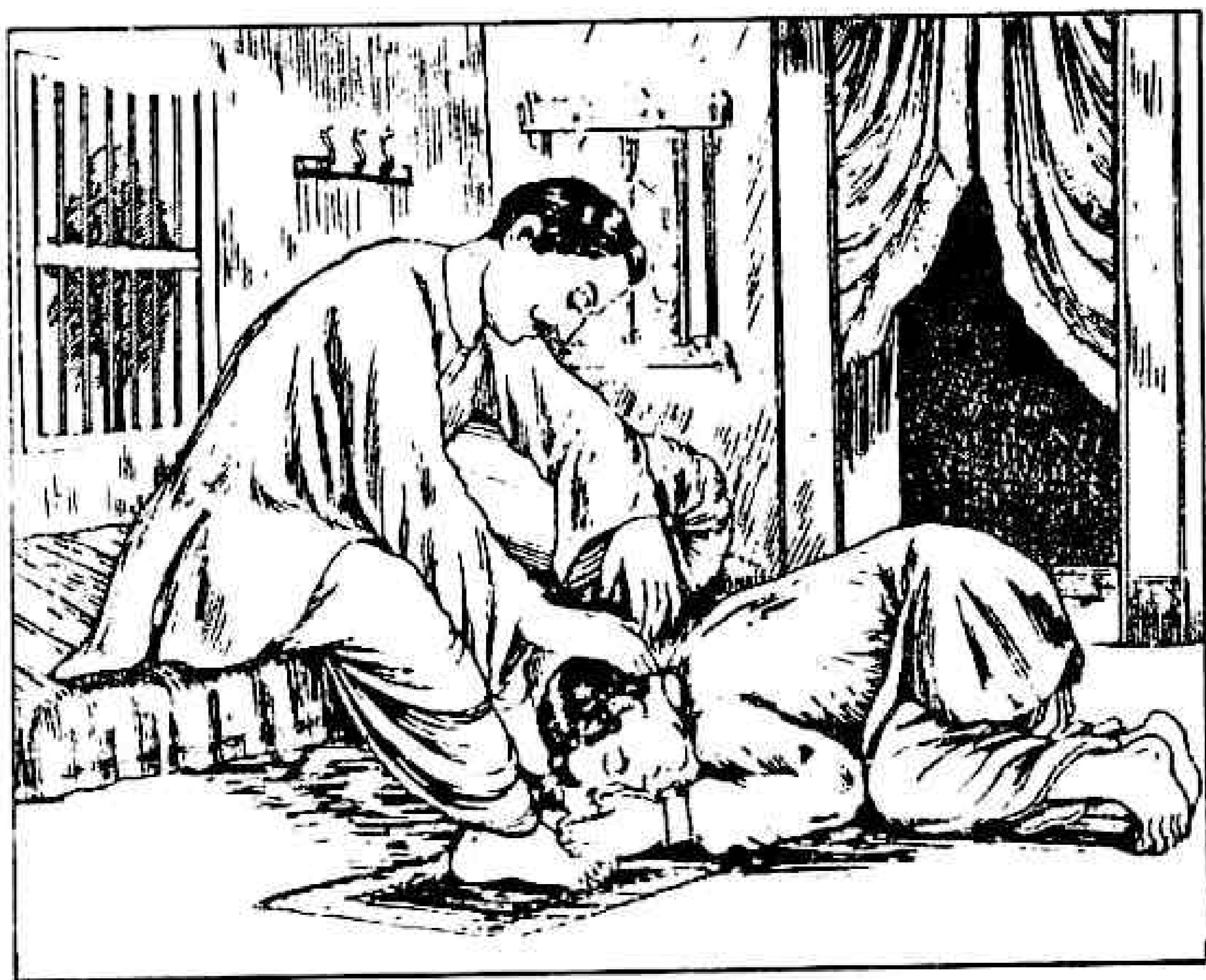
अभ्यास— १-सिद्धार्थने हंसको अपनी गोदमें क्यों उठा लिया?
२-देवदत्तने सिद्धार्थसे क्या कहा?
३-सिद्धार्थने देवदत्तको क्या उत्तर दिया?
४-राजाने क्या कहा?
५-इस पाठसे क्या सीखना चाहिये?



पाठ १४

अच्छे बननेका उपाय

सबेरे उठते ही सबसे पहले भगवान्‌को मन-ही-मन प्रणाम करो। पीछे धरती माता, अपनी माता, पिता, बड़े भाई, बड़ी बहिन आदि सब बड़ोंको प्रणाम करो।



दिनमें पहले-पहल जब अपने किसी बड़ेके सामने जाओ तो उन्हें प्रणाम करो और बराबरवालोंको नमस्कार या राम राम।

जब माँ, पिताजी या बड़े भाई आदि किसी नये आदमीसे तुम्हारा परिचय करायें तो उन नये आदमीको प्रणाम करो।

जिस समय किसीको प्रणाम करो, उस समय हाथमें कोई भद्दी चीज न रखो। चिल्लाकर प्रणाम न करो। हाथ जोड़कर अपना सिर उनके दोनों चरणोंमें रख दो।

जब कोई तुम्हें पुकारे तो जोरसे चिल्लाओ मत। आदर और प्रेमके साथ धीमे स्वरमें उत्तर दो और उसके पास जाकर उसकी बात सुनो।

अपनेसे बड़ोंकी ओर पीठ करके मत बैठो। चलते समय उनके आगे-आगे मत चलो। साथमें या पीछे रहो।

चलते समय रास्तेमें कोई चीज पड़ी हो तो उसपर पैर मत रखो। ढेला पड़ा हो तो उसे ठोकर मत मारो। उठाकर अलग डाल दो।

घरमें कोई कामके लिये कहे तो उसे कर दो। पिताजी या और कोई पानी माँगे तो हाथ धोकर पानी दो। गिलासमें पानी डालनेसे पहले उसे अच्छी तरह धो लो। घड़ेमेंसे पानी निकालकर उसे वापस ढक दो।

अपने कपड़ोंकी सँभाल रखो। गंदी जगह मत बैठो, धूलमें मत बैठो। हाथ धोकर कपड़ोंसे मत पोंछो। हाथ पोंछनेके लिये रूमाल रखो। रूमाल या धोतीको मुँहमें मत लो। कपड़ोंपर स्याही न डालो। स्याही लगे हाथ कपड़ोंसे मत छुवाओ।

अपनी पढ़ाई-लिखाईकी चीजोंको ठीक रखो। स्याही मत बिखेरो। स्याहीमें कूड़ा मत डालो। झुककर मत

पढ़ो। झुककर मत लिखो। पुस्तकको आँखसे मत सटाओ। उसे दूर रखो। समयपर पढ़ो।

पढ़ते समय ध्यानसे पढ़ो, खेलते समय ध्यानसे खेलो। काम करते समय ध्यानसे काम करो। चलते समय ध्यानसे चलो। खाते समय ध्यानसे खाओ। सब काम ध्यानसे करो। किसीकी चीजको मत छुओ। किसीसे कोई चीज न माँगो। दूसरा कोई कुछ दे तो माताजी, पिताजी या घरके किसी बड़े आदमीसे पूछकर लो। चीज उतनी ही लो जितनी तुम्हें चाहिये। खानेकी चीज जूठी मत छोड़ो। खाते समय कोई चीज जमीनपर मत बिखेरो। खाकर मुँह साफ करो। अपने जूठे बरतनोंको उठाकर साफ करनेकी जगह रख दो। हाथ धो लो।

हाथोंको साफ रखो। नख मत बढ़ने दो। कानमें तिनका मत डालो। मुँहमें अँगुली मत डालो। नाकमें अँगुली मत डालो। पानी या दूधमें अँगुली मत डालो।

इन बातोंका पालन करनेवाला अच्छा लड़का कहलाता है। उसे सब प्यार करते हैं। सबको अच्छा लड़का बनना चाहिये।

अभ्यास—

१-प्रात:काल उठते ही क्या करना चाहिये?

२-जब कोई पुकारे तो कैसे उत्तर देना चाहिये?

३-इस पाठमें अच्छे बननेके क्या-क्या उपाय बताये गये हैं?

